Analysis: A Peer Review Research Journal of Language and Human Development (JLHD)
https://www.talentpublication.info/ Issue:2/Volume: 1/2024 ISSN:2583-9985

राक्षस और मस्से वाले बूढ़े की कहानी

Translator: Anant Prasad Kharwar
Department of Foreign Languages (Old CHC Building)
Faculty of Arts, Banaras Hindu University
Varanasi, Uttar Pradesh, 221005
Email: anant.sarp@gmail.com

*अनुवादित कहानी, **"राक्षस और मस्से वाले बूढ़े की कहानी"** जापान की एक बहुत ही लोकप्रिय लोककथा है , जो कई सदियों से जापान के विभिन्न भागों में सुनी और सुनाई जाती रही है। इस कहानी के लेखक का नाम अज्ञात है । यह कहानी मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से फैली है, इसलिए अलग-अलग क्षेत्रों में इसके कई रूप देखे जा सकते हैं। कहानी दो बूढ़े लकड़हारों की है, जो अपने गालों पर कष्टदायक मस्से से जूझ रहे थे ।*

*यह कहानी जापान के विभिन्न लोककथा संग्रहों में पाई जाती है। जिसे आमतौर पर जापानी में "**कोबुतोरि**" (**瘤取り**), " **कोबुतोरि जीसान**" (**瘤取り爺さん**) या " **कोबुतोरि जिजी**" (**瘤取り爺い**) के नाम से जाना जाता है । 13 वीं शताब्दी के आरंभिक संकलन **उजीशुई मोनोगातारी** को इस कहानी का मुख्य स्रोत माना जाता है, जिसमें इसका उल्लेख (**鬼に瘤取らるる事**) **ओनि नि कोबुतोरारूरू कोतो** के रूप में किया गया है।[1] इस कहानी का एक अन्य संस्करण प्रसिद्ध जापानी लोककथाकार कुनियो यानागिता के लोककथा संग्रह में भी देखा जा सकता है।[2] जिसमें इस कहानी का शीर्षक (**瘤二つ**) **कोबुफुतात्सु** है।*

कुछ संस्करणों में मस्सा राक्षस द्वारा हटाया जाता है, हालांकि, यानागिता कुनिओ की कहानी में वर्णन किया गया है कि मस्सा तेंगु[3] के द्वारा हटाया जाता है । कुछ विविधाताओं के साथ मिलती-जुलती कहानियाँ चीनी, कोरियाई और अन्य एशियाई संस्कृतियों में भी मिलती हैं । चार्ल्स विक्लिफ़ गुडविन (एक ब्रिटिश विद्वान), आयरिश परंपरा में भी एक ऐसी ही कहानी का वर्णन करते हैं।

राक्षस और मस्से वाले बूढ़े की कहानी

एक पुरानी बात है । किसी स्थान पर एक बूढ़ा आदमी रहता था, जिसके दायें गाल पर एक बड़ा सा मस्सा था । वह मस्सा बिल्कुल एक नारंगी जितना बड़ा था । मस्से की वजह से बूढ़े को किसी के सामने जाने में शर्म आती थी और वह पहाड़ों से जलावन की लकड़ियाँ काट कर अकेले ही जीवन यापन करता था

[1] https://arimeiro.hatenablog.com/entry/2019/10/07/195857/30/05/2025,
[2] http://leonocusto.blog66.fc2.com/blog-entry-2831.html/30/05/2025,

[3] तेंगु एक काल्पनिक प्राणी है, जिसका वर्णन कई जापानी लोककथाओं में किया गया है और यहां तक वन देवता के रूप में भी उनकी पूजा होती है। आज भी तेंगु जापानी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

। एक दिन की बात है, बूढ़ा हमेशा की तरह पहाड़ पर लकड़ियाँ काटने गया । उस दिन अचानक हवा बहने लगी, बादल गरजने लगे, बिजलियाँ चमकने लगीं और मूसलाधर बारिश शुरु हो गयी । मार्ग अवरुद्ध हो जाने से बूढ़ा पहाड़ों में ही फँस गया । एक चिड़िया तक नहीं थी और डर के मारे बूढ़े को अब कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। ठीक उसी जगह पर उसे एक बड़े पेड़ की कोटर दिखाई पड़ी । बूढ़ा प्रसन्न होकर बोला " प्रभु की बड़ी कृपा है "।

बूढ़ा तुरंत उस कोटर में घुस गया। जल्दी ही दिन ढल गया और घनी अंधेरी रात हो गई । बूढ़ा अभी भी पेड़ की कोटर में ही दुबका बैठा था । देखते-देखते बारिश भी रुक गयी और चांद निकल आया। तभी कहीं दूर से बहुत सारे लोगों की आवाजें सुनाई देने लगीं, जो धीरे-धीरे पास आती प्रतीत हो रही थीं। घने पहाड़ों के बीच, वो भी घनी अँधेरी रात में, बिलकुल अकेला के कारण बूढ़े को डर लग रहा था, ऐसे में अचानक ही मनुष्यों का आभास मिलने से बूढ़े को थोड़ी राहत मिली और उसकी जान में जान आई । उसने तुरंत बाहर आकर देखा । लेकिन जब उसने बाहर आकर चंद्रमा की रोशनी में देखा तो, वह लोग जो वहाँ आये थे, भयानक आकृति वाले राक्षस लग रहे थे । उनमें जो लाल रंग के राक्षस थे उन्होंने नीले कपड़े पहने थे और जो नीले रंग के राक्षस थे उन्होंने लाल रंग के कपड़े पहने हुए थे और लाल लंगोट बाँधे हुए थे । उनमें एक आँख वाले राक्षस भी थे और ऐसे विकृत राक्षस भी थे जिनके तो मुँह ही नहीं थे। क्या कहें! उनमें कोई भी सुंदर नहीं था और ऐसी भयानक आकृति वाले लगभग सौ लोग शोर-गुल करते हुए वहाँ एकत्र हो गए । आग जलाकर और एक बड़ा घेरा बनाकर, वह लोग उस बूढ़े के कोटर के सामने पालथी मार कर बैठ गए ।

उस दृश्य को देखकर बूढ़ा डर से काँपने लगा और मानो बेजान सा हो गया । उनमें से मुखिया जैसा दिखने वाला राक्षस एक ऊँचे से आसन में धँस कर बैठा हुआ था और उसके दोनों तरफ अनगिनत राक्षस दो पंक्तियो में बैठे हुए थे । उनकी भयानक आकृति और दशा किसी भी तरह से अवर्णनीय है । थोड़ी ही देर में शराब की दावत शुरु हुई । सभी राक्षस आपस में मिलकर बड़े-बड़े प्यालो में शराब पी रहे थे, गाना गा रहे थे, झूम रहे थे और किसी भी प्रकार से वो इस संसार के मनुष्यों से अलग नहीं लग रहे थे । बीच-बीच में प्याला बदलते हुए राक्षसों का मुखिया कहता है " बस अब और नहीं, लगता है अब शराब चढ़ गयी है " । तभी नीचे बैठे राक्षसो में से एक युवा राक्षस एक हाथ से लकड़ी की चौकोर थाली बढ़ाते हुए और बिना मतलब के ही बड़बड़ाते हुए आसन पर बैठे मुखिया के सामने जाकर कुछ बातें करता है । मुखिया अपने बायें हाथ में प्याला पकड़े हुए था और उसके हँसने का तरीका बिलकुल मनुष्यों जैसा ही था। अपना नृत्य ख़त्म होने पर एक युवा राक्षस वापस अपनी जगह जा कर बैठ जाता है । उसके बाद एक के बाद दूसरा राक्षस खड़ा होता है, हाथ हिलाकर, कमर मटका कर बेढंगा सा नृत्य करता है । उन राक्षसों में बुरा नृत्य करने वाले भी थे और कुछ अच्छा नृत्य करने वाले भी थे ।

बूढ़ा ये सब बड़े आश्चर्य से देख रहा था । तभी ऊँचे आसन पर बैठे मुखिया ने कहा " आज रात शराब की दावत हमेशा से ज्यादा मजेदार थी और नृत्य भी बेशक अनोखा था, जिसे बार-बार देखने का मन करे । " यह सारी बातें सुन रहे बूढ़े को अचानक ऐसा लगा जैसे उस पर कुछ सवार हो गया हो । एक बार मैं भी नाचूँगा ऐसा सोचकर वह बूढ़ा कूद कर कोटर से बाहर आया लेकिन अपने मन को शांत करके उसने अपनी इच्छा को दबा लिया। फिर भी राक्षसों के तालियों की आवाज उसे किसी भी चीज से ज्यादा आनन्ददायक लग रही थी इसलिये उसने सोचा ठीक है! इसी तरह से दौड़ते हुए जाकर नाचने लग जाता हूँ, अगर वो मुझे मार भी देंगे तो कोई बात नहीं । ऐसा विचार कर के, अपनी टोपी नाक तक झुका कर, और अपनी कुल्हाड़ी

कमर में खोंस कर वह लड़खड़ाते हुए बाहर निकल आया और ऊँचे आसन पर बैठे राक्षसों के मुखिया के सामने जाकर नृत्य करने लगा । उसे देखकर सारे राक्षस आश्चर्य से उठ खड़े हुए और " ये क्या है, अरे ! ये कौन है ? " सब इस प्रकार शोर मचाने लगे ।

बूढ़ा उछल-उछल कर, झुक-झुक कर और अपने शरीर को अलग-अलग ढ़ंग से मटका-मटका कर गाते हुए, साँस फूल जाने तक पूरे मंच पर यहाँ से वहाँ तक नाचता रहा । उसके नृत्य की सुंदरता ने मुखिया समेत लेकर वहाँ बैठे सभी राक्षसों को आश्चर्यचकित और मुग्ध कर दिया । इस पर राक्षसों के मुखिया ने बूढ़े से कहा " मैं वर्षों से ऐसी दावत करता आ रहा हूँ, पर तुम्हारे जैसा नाचने वाला पहले कभी नहीं देखा । बूढ़े बाबा अगली बार जब ऐसी शराब की दावत हो तो तुम जरूर आना "। इस पर बूढ़ा बोला " हाँ, हाँ क्यों नहीं ? इसमें कहने की कोई आवश्यकता नहीं । इस बार तो अचानक ही बिना तैयारी के नृत्य किया इसीलिए अपना सर्वोत्तम नृत्य नहीं कर सका । अगर आप को ज्यादा अच्छा न लगा हो तो अगली बार और अच्छा नृत्य कर के दिखाऊँगा "।

इस पर राक्षसों के मुखिया ने कहा " अच्छा था और तुम अगली बार अवश्य आना। मैं बहुत प्रसन्न हूँ " । तभी आसन के पास बैठे तीसरे राक्षस ने कहा " यह बूढ़ा कह तो रहा है पर शायद ऐसा भी हो सकता है कि अगली बार ये आए ही नहीं । इसीलिए बंधक के रुप में इसकी कोई चीज अपने पास रख लेना ही अच्छा होगा " । यह बहुत ही अच्छा होगा, मुखिया ने सहमति जताते हुए कहा । तो फिर बंधक में क्या रखा जाये ? इस पर सब आपस में अलग-अलग विचार रखने लगे । राक्षसों के मुखिया ने एक अच्छा विचार आने पर अपनी जंघा को ठोकते हुए कहा " इस बूढ़े के गाल पर जो मस्सा है अगर उसे रख लिया जाये तो कैसा रहेगा ? ऐसा कहते हैं कि मस्सा सुख-समृद्धि की निशानी होता है । इसके दुःख में बूढ़ा अवश्य आएगा, इसमें कोई शंका नहीं है " ।

यह सुन कर बूढ़े को बहुत ही आश्चर्य हुया और वह हड़बड़ाते हुए बोला " क्या ! क्या कहा आपने ? चाहे तो आप मेरी आँखें या नाक रख लीजिए पर इस मस्से को मत लीजिए । कई सालों से बड़े जतन से रखे इस मस्से को आप यदि एकाएक ले लेंगे तो यह बहुत ही दुखःद होगा " । इस पर मुखिया बोला " बस बहस मत करो, इस बूढ़े के दुःख को देखकर लगता है कि यह मस्सा अवश्य ही बहुत ही महत्वपूर्ण वस्तु है । अवश्य इसे ही निकाल लो " । इस पर नीचे के राक्षस बूढ़े के पास गए, और अभी निकाले देते हैं ऐसा कहते हुए उन्होने मस्से को पकड़ कर खींचा और मस्सा एक ही झटके में बिना किसी परेशानी के निकल गया और इसमें आश्चर्य की बात यह हुई कि बूढ़े को ज़रा भी दर्द नहीं हुआ । " अगली बार शराब की दावत में अवश्य आना, ठीक है ? " मुखिया बोला । " हाँ जी बिल्कुल समझ गया " ऐसा उस बूढ़े आदमी ने उत्तर दिया ।

देखते ही देखते सुबह होने लगी और पहाड़ों के पक्षी जब बोलने लगे तो इसके साथ ही सारे राक्षस भी कहीं चले गए । बूढ़े ने डरते-डरते जब अपने गालों को छूकर देखा तो अरे ! ये क्या हुआ ? वर्षों से उभरा हुआ वो मस्सा बिना किसी निशान के ऐसे गायब हो गया जैसे किसी ने जड़ से ही निकाल दिया हो । " मस्सा गायब हो गया, अब मस्सा नहीं है " । बूढ़ा आश्चर्य से बिना कुछ सोचे ही चिल्लाया । उसे बिल्कुल सपने जैसा ही लग रहा था । वह बहुत ही खुश हुआ और लकड़ी काटना भूलकर जल्दी से घर वापस लौट गया ।

बूढ़े के चिकने चेहरे को देख कर " अरे ! स्वामी आखिर ये कैसे हो गया ? उसकी पत्नी ने चकित होते हुए आँखें झपका कर पूछा । तब बूढ़े ने पिछली रात की सारी बातें उसे विस्तार से बताई । अरे ऐसी भी विस्मयकारी बात हो सकती है क्या ! उसकी पत्नी बहुत ही आश्चर्यचकित हुई ।

उसके बगल के ही घर में भी बायें गाल पर एक बड़े से मस्से वाला दूसरा बूढ़ा रहता था । पड़ोस वाले बूढ़े के मस्से के गायब होने की घटना को देखकर वह आश्चर्यचकित होकर सोचने लगा कि, आखिर इसका मस्सा कैसे गायब हो गया ? कहाँ के चिकित्सक से निकलवाया होगा ? उसने बूढ़े से कहा " मैं भी इस मस्से के बोझ से मुक्ति पाना चाहता हूँ, कृपया मुझे भी बताइए " । तब पहले वाले बूढ़े ने बताया कि वो मस्सा मैंने किसी चिकित्सक से नहीं निकलवाया बल्कि किन्हीं कारणों से राक्षसों ने निकाल दिया । वाह ! तब तो मैं भी वैसा ही करके अपने मस्से को निकलवाऊँगा और पिछली रात की सारी घटना उसने तरह-तरह से बूढ़े से पूछी, तो उसने सब कुछ विस्तार से बता दिया ।

पड़ोस वाला बूढ़ा भी जैसा उसे बताया गया था, उसी तरह से पहाड़ पर जाकर, पेड़ की कोटर में बैठ कर प्रतीक्षा करने लगा । थोड़ी ही देर बाद सच में ही जैसा कि उसने सुना था, ढ़ेर सारे राक्षस वहाँ आ गए और घेरा बनाकर शराब पीना और शोर मचाना शुरू कर दिया । ओ ! बूढ़े बाबा कहाँ हो ? आ गए हो क्या ? जब उन्होंने ऐसा कहा तो बूढ़ा डरता हुआ धीरे- धीरे कोटर से बाहर आया ।

ये देखकर राक्षस " आ गया , आ गया " इस प्रकार शोर मचाने लगे, जिसे सुनकर आसन पर बैठे मुखिया ने कहा " ओ ! बूढ़े बाबा यहाँ आओ और जल्दी से नृत्य करो " । परंतु ये बूढ़ा पहले वाले बूढ़े की अपेक्षा बहुत ही बेढ़ंगा था और डर-डर कर बेताल में नाच रहा था, जिसे देखकर मुखिया बहुत ही गुस्से से बोला " ये क्या है ? इस बार का नृत्य बहुत ही भद्दा था, बिल्कुल भी मज़ा नहीं आया । मैं अब इसे देखना नहीं चाहता । ओ ! पिछली बार जो बंधक रखा था वो मस्सा इसे वापस कर दो " । तब नीचे बैठे राक्षस उठ खड़े हुए और " ये लो तुम्हारी अमानत " ऐसा कहते हुए बूढ़े के जिस गाल पर मस्सा नहीं था, वहाँ दे मारा । बड़ी ही दुखःद स्थिति हुई, बूढ़ा तो अपना मस्सा निकलवाने आया था पर इसके विपरीत अब उसके दायें और बायें दोनों गालों पर मस्से हो गए ।